Khaufe Khuda Walon Ki Namaaz (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 376
Weekly Booklet : 376

अमीरे अहले सुन्नत..... की किताब "फ़ैज़ाने नमाज़" की एक क़िस्त

ख़ौफ़े ख़ुदा वालों की नमाज़

(सफ़हात 18)

हर वक़्त रोने वाले बुज़ुर्ग 06
जल्दी जल्दी नमाज़ पढ़ने से क्या होता है ? 08
अवाम कौन से दरजे की तिलावत करें ? 15
दूल्हे की नमाज़ (वाक़िआ) 16

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दावते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

ख़ौफ़े ख़ुदा वालों की नमाज़ (1)

दुआए अ़त्तार : या **अल्लाह** पाक ! जो कोई 18 सफ़्हात का रिसाला : **"ख़ौफ़े ख़ुदा वालों की नमाज़"** पढ़ या सुन ले उसे अपना ह़क़ीक़ी ख़ौफ़ अ़त़ा फ़रमा कर उसे मां बाप समेत बे ह़िसाब बख़्श दे ।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे । (ترمذی، 2/27، حدیث:484)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

शैत़ान के तीन हथियार (वाक़िआ़)

ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : बनी इसराईल के एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه को शैत़ान ने बहकाने की काफ़ी कोशिश की लेकिन काम्याब न हुवा । एक दिन वोह बुज़ुर्ग किसी ज़रूरत की ख़ातिर निकले तो शैत़ान भी साथ हो लिया, उस ने ख़्वाहिशात और ग़ुस्से के ज़रीए वर्ग़लाना चाहा, लेकिन कुछ न हुवा । फिर ख़ौफ़ज़दा करने के लिये उस ने पहाड़ से एक **चट्टान** लुढ़का दी, बुज़ुर्ग ने **अल्लाह** का ज़िक्र शुरूअ़ कर

1 ... येह मज़्मून अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब "फ़ैज़ाने नमाज़" सफ़्हा 355 ता 362 और 367 ता 374 से लिया गया है ।

दिया तो वोह चट्टान दूर चली गई। फिर डराने के लिये उस ने **शेर** और दीगर दरिन्दों की सी शक्ल बनाई, उन्हों ने फिर ज़िक्रे इलाही से काम लिया और उस की परवा न की। जब बुज़ुर्ग ने **नमाज़** शुरूअ़ की तो शैत़ान **सांप** की शक्ल में उन के क़दमों से होता हुवा जिस्म से लिपट गया, ह़त्ता कि सर तक पहुंच गया, जब उन्हों ने सज्दा करना चाहा तो वोह उन के चेहरे से लिपट गया, जब बुज़ुर्ग ने सज्दे के लिये सरे मुबारक रखा तो **सांप** ने मुंह खोला ताकि उन के सर को निगल ले, बुज़ुर्ग ने उसे हटा कर ज़मीन पर सज्दा फ़रमाया, जब **नमाज़** मुकम्मल कर ली तो आगे चल पड़े। शैत़ान खुल कर सामने आ गया और कहने लगा : मैं ने आप को बहकाने की बड़ी कोशिशें कीं लेकिन काम्याब न हो सका, मैं आप से दोस्ती करना चाहता हूं, आइन्दा आप को कभी भी नहीं बहकाऊंगा। बुज़ुर्ग ने फ़रमाया : तू ने आज मुझे डराने की बहुत कोशिश की लेकिन بِحَمْدِاللّٰہ मैं नहीं डरा, मुझे तेरी दोस्ती की कोई ज़रूरत नहीं। शैत़ान बोला : क्या आप मुझ से अपने घर वालों के ह़ालात नहीं पूछेंगे कि आप की ग़ैर मौजूदगी में उन पर क्या गुज़री! बुज़ुर्ग बोले : मैं उन से पहले ही मर चुका हूं (या'नी मुझे उन के बारे में तुझ से पूछने की कोई ज़रूरत ही नहीं) वोह बोला : क्या आप येह नहीं पूछेंगे कि मैं लोगों को कैसे बहकाता हूं! फ़रमाया : हां येह बता दे। शैत़ान बोला : तीन चीज़ों के ज़रीए़ बहकाता हूं : ﴾1﴿ **बुख़्ल** ﴾2﴿ **ग़ुस्सा** और ﴾3﴿ **नशा**। इन्सान जब **बुख़्ल** में मुब्तला हो जाता है तो मैं उस का माल उस की नज़र में कम दिखाना शुरूअ़ कर देता हूं, यूं (अपना माल बढ़ाए चले जाने की हवस में) वोह अपने माल के शर्ई हुक़ूक़ अदा करने से रुक जाता बल्कि पराए माल में रग़बत करने लग जाता है। और जब इन्सान **ग़ुस्से** में

आता है तो मैं उस से यूं खेलता हूं जैसे बच्चे गेंद (Ball) से। अगर्चे (वोह इतना नेक हो कि) अपनी दुआ से मुर्दे ज़िन्दा कर दे तब भी मैं उस ग़ुसीले आदमी से मायूस नहीं होता, क्यूं कि कभी न कभी वोह **ग़ुस्से** में बेक़ाबू हो कर कोई ऐसा जुम्ला बक देगा जिस से उस की आख़िरत तबाह हो जाएगी। और जब इन्सान **नशा** करने लग जाए तो मैं उसे अपनी मरज़ी से जिस बुराई की जानिब चाहता हूं इस त़रह़ खींच कर ले जाता हूं जिस त़रह़ बकरी को कान पकड़ कर ले जाया जाता है। (تنبیہ الغافلین، ص110 ملخصاً)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! इस वाक़िअे से मा'लूम हुवा कि शैत़ान बन्दे को हर मुम्किन सूरत में इबादत से रोकने की कोशिश करता है मगर नेक और मुख़्लिस बन्दे **अल्लाह** करीम की मदद से उस के चुंगल में फंसने से बच जाते हैं। येह भी पता चला कि **बुख़्ल, ग़ुस्सा** और **नशा** शैत़ान के तीन बद तरीन हथियार हैं जिन से वोह लोगों को बरबाद करने की कोशिशें करता है, हर मुसल्मान को चाहिये कि शैत़ान के इन हथियारों को नाकाम बना दे।

कमर तोड़ी है इस्यां ने, दबाया नफ़्सो शैत़ां ने न करना ह़श्र में रुस्वा, मेरा रखना भरम मौला

(वसाइले बख़्शिश, स. 97)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

काश ! रोते रोते नमाज़ पढ़ना नसीब हो

नमाज़ की तक्बीरे तह़रीमा के लिये हाथ उठाते वक़्त काश ! येह तसव्वुर हो कि मैं गोया **अल्लाह** पाक को देख रहा हूं। या कम अज़ कम येह ख़याल पैदा हो जाए कि **अल्लाह** पाक मुझे देख रहा है और मैं एक लम्ह़े के लिये भी उस से ओझल (या'नी छुपा हुवा) नहीं हूं। ज़हे नसीब ! ह़ालते क़ियाम में सर नदामत से झुका हो, कन्धे हैबत से थरथरा रहे हों, चेहरा

ख़ौफ़ से ज़र्द हो, दिल में **ख़ुशूअ़** की कैफ़िय्यत हो और आ'ज़ा से इस का इज़्हार हो रहा हो नीज़ आंखों से आंसू रवां हों और रुकूअ़ व सुजूद में उस की अ़ज़मत पेशे नज़र हो नीज़ सज्दे में येह यक़ीन भी हो कि मैं इस वक़्त **अल्लाह** पाक के बहुत ज़ियादा क़रीब हूं जैसा कि **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "बन्दा **अल्लाह** पाक से सब से ज़ियादा क़रीब सज्दे की हालत में होता है।" (مسلم، ص198، حدیث:1083) लेकिन येह तमाम कैफ़िय्यात उस सूरत में पैदा होंगी जब कि दिल दुन्यावी आलाइशों (या'नी गन्दगियों) से पाको साफ़ होगा, दिल में येह ख़याल कि **अल्लाह** करीम देख रहा है और जवाब देने के लिये उस के सामने पेशी का एह़सास हो और ज़ेह्न में आख़िरत की फ़िक्र रची बसी हो।

मुबारक सीना हांडी की त़रह़ जोश मारता

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब **नमाज़** अदा फ़रमाते तो आप का सीनए मुबारक हांडी की त़रह़ जोश मारता था। (مسند امام احمد، 5/501، حدیث:16326)

रंग ज़र्द पड़ जाता (वाक़िआ़)

नवासए रसूल, इमामे आ़ली मक़ाम, ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के शहज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه जब वुज़ू करते तो रंग मुबारक ज़र्द (या'नी पीला) हो जाता। घर वालों ने पूछा : वुज़ू के वक़्त आप को येह क्या हो जाता है? इर्शाद फ़रमाया : "तुम्हें क्या मा'लूम मैं किस की बारगाहे आ़ली में खड़ा होने वाला हूं!" (الزہد للامام احمد، ص363، حدیث:2138)

मौला अ़ली पर कपकपी त़ारी हो जाती (वाक़िआ़)

नमाज़ का जब वक़्त आता तो मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते

अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ पर **कपकपी त़ारी हो जाती** और चेहरे का रंग बदल जाता, अ़र्ज़ की जाती : या अमीरल मुअमिनीन ! क्या हुवा है ? फ़रमाते : उस अमानत के अदा करने का वक़्त आ गया है जिसे **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** ने ज़मीनो आस्मान और पहाड़ों पर पेश किया तो उन्हों ने उसे उठाने से इन्कार कर दिया और डर गए जब कि मैं (या'नी आदमी) ने उसे उठा लिया। (احیاء العلوم، 1/206)

ह़ज़रते यह़या बहुत ज़ियादा रोते थे

अल्लाह पाक के सच्चे नबी, नबी इब्ने नबी ह़ज़रते यह़या बिन ज़करिय्या عَلَیْہِمَا السَّلَام जब **नमाज़** के लिये खड़े होते तो (ख़ौफ़े ख़ुदा से) इस क़दर रोते कि दरख़्त और मिट्टी के ढेले (या'नी डले। टुकड़े) भी साथ रोने लगते। ह़ज़रते यह़या عَلَیْہِ السَّلَام इसी त़रह़ मुसल्सल आंसू बहाते रहते थे, यहां तक कि आंसूओं के सबब आप के रुख़्सारे मुबारक (या'नी गालों) पर ज़ख़्म हो गए, आप की अम्मीजान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہَا ज़ख़्मों पर ऊनी पट्टियां चिपटा दिया करती थीं, इस के बा वुजूद जब आप दोबारा **नमाज़** के लिये खड़े होते तो फिर रोना शुरूअ़ कर देते, जिस के नतीजे में वोह ऊनी पट्टियां भीग जातीं। जब अम्मीजान उन्हें ख़ुश्क करने के लिये निचोड़तीं और आप अपने आंसूओं का पानी अम्मीजान के बाज़ू पर गिरता देखते तो बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ करते : "ऐ **अल्लाह** करीम ! येह मेरे आंसू हैं, येह मेरी अम्मीजान हैं और मैं तेरा बन्दा हूं जब कि तू सब से ज़ियादा रह़म फ़रमाने वाला है।" (احیاء العلوم، 4/225 ملخصًا)

फ़ारूक़े आ'ज़म के रोने की आवाज़ (वाक़िआ़)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के

पीछे **नमाज़** पढ़ी, मैं ने तीन सफ़ों के पीछे से आप के रोने की आवाज़ सुनी। (حلیۃ الاولیاء، 1/88، حدیث:134)

जहन्नम का नक़्शा खिंच जाता (वाक़िआ)

ह़ज़रते बिश्र बिन हुसैन رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सईद बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को जब भी **फ़र्ज़ नमाज़** में खड़ा देखा तो आप के **आंसू** दाढ़ी मुबारक पर बहते हुए देखे। ह़ज़रते इस्ह़ाक़ बिन इब्राहीम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ह़ज़रते सईद बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को क़िब्ला रुख़ **नमाज़** पढ़ते देखा करता और चटाई पर आप के **आंसूओं** के गिरने की आवाज़ सुना करता। ह़ज़रते अबू अ़ब्दुर्रह़मान असदी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सईद बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से अ़र्ज़ किया : ऐ अबू मुह़म्मद ! आप **नमाज़** में रोते क्यूं हैं ? पूछा : ऐ भतीजे ! येह बात क्यूं पूछ रहे हो ? मैं ने अ़र्ज़ की : शायद इस से **अल्लाह** पाक मुझे फ़ाएदा पहुंचाए। इर्शाद फ़रमाया : **मैं जब भी नमाज़ के लिये खड़ा होने लगता हूं तो जहन्नम का नक़्शा मेरे सामने खिंच जाता है।** (تاریخ ابن عساکر، 21/203)

हर वक़्त रोने वाले बुज़ुर्ग

ह़ज़रते सुफ़्यान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सईद बिन साइब त़ाइफ़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के आंसू क़रीब क़रीब थमते ही न थे, हर वक़्त रोते हुए नज़र आते थे। **नमाज़ अदा करते तो रोते रोते,** त़वाफ़ करते तो रोते रोते, बैठे हुए देख कर क़ुरआने करीम पढ़ते तो रोते रोते, मेरी आप से जब रास्ते में मुलाक़ात होती तब भी रो रहे होते। एक शख़्स ने आप को हर वक़्त रोते रहने पर मलामत की (या'नी बुरा भला कहा) तो रो दिये और (बत़ौरे

आ़जिज़ी) फ़रमाने लगे : तुम्हें (मेरे रोने पर नहीं बल्कि) मेरी ख़ताओं और ज़ियादतियों पर मलामत करनी चाहिये कि येह दोनों (या'नी ख़ताएं और ज़ियादतियां) मुझ पर ग़ालिब आ चुकी हैं। उस शख़्स ने जब येह सुना तो आप को छोड़ कर चला गया। (موسوعۃ ابن ابی الدنیا، 3/215، رقم:242)

नमाज़ में रोने का शर्ई मस्अला

नमाज़ के दौरान **दर्द** या मुसीबत की वज्ह से येह अल्फ़ाज़ **आह, ऊह, उफ़, तुफ़** निकल गए या आवाज़ से रोने में हुरूफ़ पैदा हो गए, नमाज़ **फ़ासिद** हो गई, अगर रोने में सिर्फ़ आंसू निकले आवाज़ व हुरूफ़ नहीं निकले तो ह़रज नहीं। (فتاوی ہندیہ، 1/101۔ ردالمحتار، 2/455) अगर **नमाज़** में इमाम के पढ़ने की आवाज़ पर रोने लगा और "अरे", "नअ़म", "हां" ज़बान से जारी हो गया तो कोई ह़रज नहीं कि येह **ख़ुशूअ़** के बाइ़स है और अगर इमाम की ख़ुश इल्ह़ानी के सबब येह अल्फ़ाज़ कहे तो **नमाज़ टूट** गई। (درمختار وردالمحتار، 2/456)

तू डर अपना इ़नायत कर, रहें इस डर से आंखें तर
मिटा ख़ौफ़े जहां दिल से, मिटा दुन्या का ग़म मौला

(वसाइले बख़्शिश, स. 98)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

नमाज़ में जो कुछ पढ़ते हैं उस के मा'ना याद हों

ख़ुशूअ़ ह़ासिल होने के लिये **नमाज़** में पढ़ी जाने वाली सूरतों और अज़्कारे नमाज़ मसलन सना, सूरए फ़ातिह़ा, रुकूअ़ और सज्दे की तस्बीह़ात व दुरूद शरीफ़ वग़ैरा के मआ़नी मा'लूम हों ताकि पता चले कि अपने परवर्दगार से क्या अ़र्ज़ कर रहे हैं। आयात व दुआ़ओं के मआ़नी

अगर ज़ेहन में मौजूद होंगे तो ख़यालात क़ाबू में रह सकेंगे, और اِنْ شَآءَالله पूरे तौर पर **ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ** से नमाज़ अदा करने की सआ़दत नसीब होगी।

दाएं बाएं कौन है इस का होश न हो

ह़ज़रते ह़कम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : येह बात **नमाज़** के पूरे होने से है कि तुम्हें मा'लूम न हो तुम्हारे दाएं बाएं कौन है।

(مصنف ابن ابی شیبہ، 1/492، حدیث:15)

सह़ाबी इब्ने सह़ाबी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : नमाज़ में **ख़ुशूअ़** येह है कि नमाज़ी अपने दाएं बाएं शख़्स को न पहचाने। **ताबेई** बुज़ुर्ग ह़ज़रते सईद बिन जुबैर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जब से मैं ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا का येह फ़रमान सुना है, **चालीस साल** होने को हैं मैं ने **नमाज़** में अपने दाएं बाएं शख़्स को नहीं पहचाना।" (اتحاف السادة المتقین، 3/181)

नमाज़ों में ऐसा गुमा या इलाही न पाऊं मैं अपना पता या इलाही

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللهُ علٰی مُحَمَّد

जल्द जल्द पढ़ने से नमाज़ की रूह़ चली जाती है

रुकूअ़, सज्दा, क़ौमा और जल्सा वग़ैरा इत़्मीनान से अदा न किये गए तो किसी सूरत में **ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़** पैदा नहीं हो सकता क्यूं कि जल्द बाज़ी से **नमाज़** की रूह़ चली जाती है।

नमाज़ अदा करने में जल्द बाज़ी

अफ़्सोस ! फ़ी ज़माना मुसल्मानों की बहुत कम ता'दाद **नमाज़** पढ़ती है और जो पढ़ते हैं उन में से भी बा'ज़ लोग जल्द बाज़ी की वज्ह से बारहा अपनी नमाज़ें ही बरबाद कर बैठते हैं। जल्द बाज़ी में ग़लत़

नमाज़ पढ़ने वाले को **नमाज़ का चोर** क़रार दिया गया है। **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "लोगों में सब से बदतर **चोर** वोह है जो अपनी नमाज़ में **चोरी** करता है।" सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! कोई शख़्स अपनी नमाज़ में किस त़रह़ चोरी कर सकता है ?" तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "वोह उस के रुकूअ़ व सुजूद पूरे नहीं करता।" या इर्शाद फ़रमाया : "वोह रुकूअ़ व सुजूद में अपनी पीठ सीधी नहीं करता।"

(مسند امام احمد، 8/386، حدیث:22705)

माल के चोर से नमाज़ का चोर बदतर है

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : "मा'लूम हुवा कि माल के चोर से **नमाज़ का चोर** बदतर है क्यूं कि माल का चोर अगर सज़ा भी पाता है तो (चोरी के माल से) कुछ न कुछ नफ़्अ़ भी उठा लेता है मगर **नमाज़ का चोर** सज़ा पूरी पाएगा इस के लिये नफ़्अ़ की कोई सूरत नहीं। माल का चोर "बन्दे का ह़क़" मारता है जब कि **नमाज़ का चोर** "**अल्लाह** पाक का ह़क़।" येह ह़ालत उन की है जो **नमाज़** को नाक़िस पढ़ते हैं, इस से वोह लोग दर्से इ़ब्रत ह़ासिल करें जो सिरे से **नमाज़** पढ़ते ही नहीं।" (मिरआतुल मनाजीह़, 2/78)

बुरे ख़ातिमे की वईद

ह़ज़रते हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللهُ عَنْه ने एक शख़्स को देखा जो नमाज़ पढ़ते हुए रुकूअ़ व सुजूद पूरे अदा नहीं करता था तो उस से फ़रमाया : "तुम ने **नमाज़** नहीं पढ़ी और अगर तुम इसी ह़ालत में इन्तिक़ाल कर जाओ तो ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के त़रीक़े पर तुम्हारी मौत

वाक़ेअ़ नहीं होगी।" (بخاری، 1/284، حدیث:808) नसाई शरीफ़ की रिवायत में येह भी है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने पूछा : तुम कब से इस त़रह़ **नमाज़** पढ़ रहे हो ? उस ने कहा : **चालीस** साल से। तो आप ने उस से इर्शाद फ़रमाया : "तुम ने **चालीस** साल से **नमाज़** ही नहीं पढ़ी और अगर इस ह़ालत में तुम्हें मौत आ गई तो दीने मुह़म्मदी पर नहीं मरोगे।" (نسائی، ص225، حدیث:1309)

कव्वे की त़रह़ चोंच न मारो

ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन शिब्ल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कव्वे की सी ठोंग (या'नी चोंच) मारने और दरिन्दे की त़रह़ हाथ बिछाने से मन्अ़ फ़रमाया। (ابوداؤد، 1/328، حدیث:862)

शर्ह़े ह़दीस

या'नी साजिद (सज्दा करने वाला) सज्दा ऐसी जल्दी जल्दी न करे जैसे कव्वा ज़मीन पर चोंच मार कर फ़ौरन उठा लेता है और सज्दे में कोहनियां ज़मीन से न लगाए जैसे कुत्ता, भेड़िया वग़ैरा बैठते वक़्त लगा लेते हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, 2/87)

जल्दी नमाज़ पढ़ने वाले की मिसाल

ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** पाक के प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स रुकूअ़ पूरे त़ौर पर अदा नहीं करता और सज्दों में ठोंगें (या'नी चोंचें) मारता है उस की मिसाल उस भूके की सी है जो एक या दो खजूर खाए तो येह उस की भूक को दूर नहीं कर सकती। (الترغیب والترہیب، 1/199، حدیث:7)

दो बार नमाज़ पढ़वाई

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि एक शख़्स मस्जिद में आया, रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिद के एक कोने में जल्वा गर

थे, उस शख़्स ने **नमाज़** पढ़ी और हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सलाम किया, उस से नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : وَعَلَيْكَ السَّلَام, लौट जाओ, **नमाज़** पढ़ो तुम ने **नमाज़** नहीं पढ़ी ! वोह लौट गया **नमाज़** पढ़ी फिर आया सलाम किया, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : وَعَلَيْكَ السَّلَام, लौट जाओ, **नमाज़** पढ़ो तुम ने **नमाज़** नहीं पढ़ी ! उस ने दूसरी बार या इस के भी बा'द अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे सिखा दीजिये। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब तुम **नमाज़** की त़रफ़ उठो तो वुज़ू पूरा करो फिर का'बे को मुंह करो, फिर तक्बीर कहो, फिर जिस क़दर क़ुरआन आसान हो पढ़ लो फिर रुकूअ़ करो ह़त्ता कि रुकूअ़ में मुत़्मइन हो जाओ फिर उठो ह़त्ता कि सीधे खड़े हो जाओ फिर सज्दा करो ह़त्ता कि सज्दे में मुत़्मइन हो जाओ फिर उठो ह़त्ता कि इत़्मीनान से बैठ जाओ फिर सज्दा करो ह़त्ता कि सज्दे में मुत़्मइन हो जाओ फिर उठो ह़त्ता कि इत़्मीनान से बैठ जाओ फिर अपनी सारी **नमाज़** में येही करो।" (بخاری، 4/172، حدیث:6251)

रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मिलती जुलती नमाज़ (वाक़िआ़)

ताबेई बुज़ुर्ग अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه सुन्नतों पर अ़मल की भरपूर कोशिश किया करते थे। जब आप ह़ाकिमे मदीना थे उन दिनों नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़ादिमे ख़ास ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ عَنْه इराक़ से मदीने शरीफ़ आए तो ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के पीछे **नमाज़** पढ़ी। उन्हें ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की **नमाज़** बहुत पसन्द आई चुनान्चे **नमाज़** पढ़ने के बा'द फ़रमाया : "مَا رَاَيْتُ اَحَداً اَشْبَهَ بِصَلَاةِ النَّبِيِّ مِنْ هٰذَا الْغُلَامِ या'नी मैं ने इस नौ जवान से बढ़ कर रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मिलती जुलती **नमाज़** पढ़ने वाला कोई नहीं देखा।" (سیرتِ عمر بن عبد العزیز لابن الجوزی، ص34)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की इन सब पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

नमाज़े आ'ला ह़ज़रत

ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद हुसैन चिश्ती निज़ामी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ जिस क़दर एह़तियात़ से **नमाज़** पढ़ते थे, आज कल येह बात नज़र नहीं आती । हमेशा मेरी दो रक्अ़त उन की एक रक्अ़त में होती थी और दूसरे लोग मेरी चार रक्अ़त में कम से कम छे रक्अ़त बल्कि आठ रक्अ़त पढ़ लिया करते थे । (ह़यात आ'ला ह़ज़रत, 1/154) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन सब पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

आक़ा की क़िराअत..... मरह़बा !

इसी त़रह़ नमाज़ में **ख़ुशूअ़** पाने के लिये तिलावत ठहर ठहर कर की जाए और जहां जहां शर्ई रुख़्सत हो वहां मसलन रात तन्हाई में तहज्जुद वग़ैरा के अन्दर निहायत ख़ुश इल्ह़ानी से क़ुरआने करीम पढ़ा जाए । ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते या'ला बिन मम्लक رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने उम्मुल मुअमिनीन तमाम मुसल्मानो की प्यारी प्यारी अम्मीजान, ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़िराअत के बारे में पूछा, तो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا ने सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ऐसी क़िराअत बयान की जिस का एक एक ह़र्फ़ वाज़ेह़ था । (نسائی، ص284، حدیث:1626 ملخصًا)

क़ुरआने करीम थोड़ा पढ़ो मगर दुरुस्त पढ़ो

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ **''मिरआतुल मनाजीह़''**

में फ़रमाते हैं : या'नी आप (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की क़िराअत निहायत आहिस्तगी से और साफ़ थी, जिस से हर कलिमा जुदागाना समझ में आता था और हर कलिमे के हुरूफ़ ح, ع, ز, ق, ظ, ض, वाज़ेह़ तौर पर समझ लिये जाते थे। एक कलिमा दूसरे से मख़्लूत़ (या'नी गुडमुड) न होता था, तिलावते क़ुरआने करीम का येह ही त़रीक़ा चाहिये, ज़ियादा पढ़ने की कोशिश न करो, (अगर्चे थोड़ा पढ़ो मगर) दुरुस्त पढ़ने की कोशिश करो। (मिरआतुल मनाजीह़, 2/247)

अच्छा क़ारी वोह जो अल्लाह से डरने वाला हो

ह़ज़रते त़ाऊस رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बयान करते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया गया : कौन शख़्स क़ुरआने करीम में ख़ुश आवाज़ और अच्छी क़िराअत वाला है ? फ़रमाया : वोह कि जब तुम उसे क़ुरआन पढ़ते सुनो तो महसूस करो कि वोह **अल्लाह** पाक से डर रहा है। (دارمی، 2/563، حدیث:3489)

.....सुनने वालों के रोंगटे खड़े हो जाते

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : येह ह़दीस उन तमाम अह़ादीस की शर्ह़ है जिस में अच्छी आवाज़, अच्छी तिलावत का हुक्म दिया गया या'नी दर्दे दिल वाली अदा और ख़ौफ़े ख़ुदा वाली क़िराअत अच्छी है, नफ़्से आवाज़ (या'नी पढ़ने वाले की अस्ल आवाज़) बारीक हो या मोटी। बा'ज़ बुज़ुर्गों को देखा गया कि उन की आवाज़ मोटी थी मगर उन की तिलावत से ख़ुद उन के और सुनने वालों के रोंगटे खड़े हो जाते थे, दिल कांप जाते थे, **अल्लाह** पाक ऐसी तिलावत नसीब करे। आमीन। (मिरआतुल मनाजीह़, 3/274)

तिलावते क़ुरआन करना यक़ीनन बहुत बड़ी सआ़दत है, क़ुरआने करीम का एक ह़र्फ़ पढ़ने पर 10 नेकियों का सवाब मिलता है, चुनान्चे

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "जो शख़्स किताबुल्लाह का एक ह़र्फ़ पढ़ेगा, उस को एक नेकी मिलेगी जो दस के बराबर होगी। मैं येह नहीं कहता الٓمٓ। एक ह़र्फ़ है, बल्कि **अलिफ़** एक ह़र्फ़, **लाम** एक ह़र्फ़ और **मीम** एक ह़र्फ़ है।" (ترمذی، 4/417، حدیث:2919)

हर ह़र्फ़ के बदले 100 नेकियां

अमीरुल मुअमिनीन मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं : जो नमाज़ में खड़े हो कर क़ुरआन की तिलावत करे उस के लिये हर ह़र्फ़ के बदले 100 नेकियां हैं और जो नमाज़ में बैठ कर तिलावत करे उस के लिये हर ह़र्फ़ के बदले 50 नेकियां हैं और जो नमाज़ के इ़लावा बा वुज़ू तिलावत करे उस के लिये 25 नेकियां हैं और जो बिग़ैर वुज़ू तिलावत करे उस के लिये 10 नेकियां हैं और रात का क़ियाम अफ़्ज़ल है क्यूं कि इस वक़्त दिल ज़ियादा फ़ारिग़ होता है। (احیاء العلوم، 1/366) (एह़याउल उ़लूम (उर्दू), 1/831)

बा'ज़ इस्लामी भाई निहायत तेज़ रफ़्तारी से क़ुरआने करीम पढ़ते हैं ताकि ज़ियादा से ज़ियादा तिलावत की सआ़दत ह़ासिल कर लें मगर दौराने तिलावत क़वाइ़दे तज्वीद की रिआ़यत नहीं करते और ग़लत़ सलत़ पढ़ जाते हैं, ह़ालां कि **क़ुरआने करीम के ह़ुरूफ़ की दुरुस्त अदाएगी और ग़लत़ पढ़ने से बचना फ़र्ज़े ऐ़न है,** चुनान्चे आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "बिला शुबा इतनी **तज्वीद** जिस से तस्ह़ीह़े ह़ुरूफ़ हो (या'नी ह़ुरूफ़ दुरुस्त अदा हों), और ग़लत़ ख़्वानी (या'नी ग़लत़ पढ़ने) से बचे, **फ़र्ज़े ऐ़न** है।" (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, 6/343)

क़ुरआने पाक ठहर ठहर कर पढ़ना चाहिये

पारह 29 **सूरतुल मुज़्ज़म्मिल** की चौथी आयत में इर्शादे रब्बानी

है : ﴿وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِیْلًا﴾ **''तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और क़ुरआन ख़ूब ठहर ठहर कर पढ़ो।''

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ''तरतील'' की वज़ाह़त करते हुए नक़्ल करते हैं : ''क़ुरआने मजीद इस त़रह़ आहिस्ता और ठहर कर पढ़ो कि सुनने वाला उस की आयात व अल्फ़ाज़ गिन सके।'' (फ़तावा रज़विय्या 6/276) नीज़ फ़र्ज़ नमाज़ में इस त़रह़ तिलावत करे कि जुदा जुदा हर ह़र्फ़ समझ आए, तरावीह़ में मुतवस्सित़ (या'नी दरमियाने) त़रीक़े पर और रात के नवाफ़िल में इतनी तेज़ पढ़ सकता है जिसे वोह समझ सके। (درمختار، 2/320) ''मदारिक'' में है : ''इत़्मीनान के साथ, ह़ुरूफ़ जुदा जुदा, वक़्फ़ (या'नी ठहरने वग़ैरा की अ़लामात) की ह़िफ़ाज़त और तमाम ह़रकात (या'नी ज़ेर, ज़बर वग़ैरा) की अदाएगी का ख़ास ख़याल रखना है। ''تَرْتِیْلًا'' (या'नी ख़ूब ठहर ठहर कर) इस मस्अले में ताकीद पैदा कर रहा है कि येह बात तिलावत करने वाले के लिये निहायत ही ज़रूरी है।'' (تفسیر مدارک، ص 1292, फ़तावा रज़विय्या, 6/278, 279) (तरतील के अह़काम जानने के लिये फ़तावा रज़विय्या जिल्द 6 सफ़ह़ा 275 ता 282 का मुत़ालआ़ फ़रमाइये)

अ़वाम दरमियाना दरजे की जल्दी वाली तिलावत करें

फ़तावा रज़विय्या जिल्द 7 सफ़ह़ा 478 ता 479 पर आहिस्ता और दरमियानी रफ़्तार से पढ़ने के ह़वाले से बहुत ख़ूब सूरत कलाम किया गया है यहां उस का ख़ुलासा आसान लफ़्ज़ों में अ़र्ज़ करने की कोशिश की जाती है : जो लोग क़ुरआने करीम पढ़ने में ग़ौरो फ़िक्र करने की सलाह़िय्यत नहीं रखते उन के लिये तिलावत करने में दरमियाना दरजे की जल्दी ही अफ़्ज़ल होना चाहिये कि जिस क़दर जल्दी पढ़ेंगे उसी क़दर तिलावत

ज़ियादा होगी और क़ुरआने करीम के हर हर्फ़ पर 10 नेकियां हैं, 100 की जगह 500 हुरूफ़ पढ़ेंगे तो हज़ार की जगह पांच हज़ार नेकियां मिलेंगी। और हर सवाब समझने ही पर मुन्हसिर नहीं। **वाक़िआ :** हज़रते इमाम अहमद बिन हम्बल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने **अल्लाह** पाक की ख़्वाब में ज़ियारत की तो अर्ज़ की : ऐ मेरे रब ! क्या चीज़ तेरे बन्दों को तेरे अज़ाब से छुड़ाने वाली है ? फ़रमाया : मेरी किताब (या'नी क़ुरआने करीम)। अर्ज़ की : इसे समझ कर पढ़ना या बिग़ैर समझे ? फ़रमाया : (दोनों त़रह़ या'नी) समझ कर (पढ़ना) और बिग़ैर समझे (पढ़ना)। (तफ़्सील के लिये देखिये : फ़तावा रज़विय्या जिल्द 7 सफ़ह़ा 478, 479)

तिलावत की तौफ़ीक़ दे दे इलाही गुनाहों की हो दूर दिल से सियाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

नमाज़ के ज़रूरी मसाइल जानना ज़रूरी है

नमाज़ के ज़रूरी मसाइल जानना ज़रूरी है क्यूं कि जो **नमाज़** के फ़राइज़, वाजिबात, सुन्नतें और **नमाज़** को फ़ासिद करने (या'नी तोड़ने) वाली चीज़ों वग़ैरा का इल्म रखता है वोह अच्छी त़रह़ **नमाज़** पढ़ सकता है जब कि जो **नमाज़** के ज़रूरी मसाइल से ना वाक़िफ़ है वोह दुरुस्त **नमाज़** क्यूंकर अदा कर सकेगा ! याद रहे ! जिस पर **नमाज़** फ़र्ज़ है उस पर नमाज़ के ज़रूरी मसाइल जानना भी फ़र्ज़ है।

दूल्हे की नमाज़ (वाक़िआ)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! इन्तिहाई नाज़ुक दौर आ गया है, हमारे यहां ऐसे मुसल्मानों की भी एक ता'दाद मिल सकती है जिन को **नमाज़** पढ़ना बिल्कुल भी नहीं आता, जैसा कि **दा'वते इस्लामी** के एक मदनी इस्लामी भाई का बयान है कि मैं एक मस्जिद में इमाम हूं। एक रात इ़शा की **नमाज़**

के बा'द मद्रसतुल मदीना (बराए बालिग़ान) के सिल्सिले में हम कुछ इस्लामी भाई मस्जिद में मौजूद थे कि एक **दूल्हा** अपने चन्द दोस्तों समेत मस्जिद में आया और मुझ से कहने लगा कि मुझे **नमाज़** पढ़ा दीजिये। मैं ने जवाबन कहा कि **नमाज़** तो मैं ने पढ़ा दी है आप अपनी पढ़ लीजिये। उस ने फिर कहा कि नहीं मुझे आप **नमाज़** पढ़ा दीजिये। तो अब मैं उस की बात समझा कि वोह कह रहा है : मुझे सिरे से **नमाज़** पढ़ना ही नहीं आती लिहाज़ा आप मुझे इस का त़रीक़ा बता दीजिये। मैं ने एक सुलझे हुए इस्लामी भाई को कहा कि आप इन्हें त़रीक़ा बता दीजिये। उन्हों ने त़रीक़ा बताया मगर उस **34 साला दूल्हे** को रुकूअ़, सुजूद, अत्तहिय्यात वग़ैरा के मुतअ़ल्लिक़ कुछ भी पता नहीं था कि येह किस को कहते हैं और कैसे करते हैं! ह़त्ता कि उसे एक एक चीज़ बतानी पड़ी कि हाथ कानों तक उठा कर नाफ़ के नीचे बांधें, रुकूअ़ व सज्दा इस त़रह़ करें, यूं शुरूअ़ से आख़िर तक उन्हें एक एक चीज़ बताई गई और हां, वोह **दूल्हा** नमाज़े इ़शा पढ़ने के लिये नहीं बल्कि इस लिये आया था कि उन की बिरादरी में शादी के मौक़अ़ पर दूल्हा को दो रक्अ़त नफ़्ल अदा करने की रस्म होती है।

मस्जिद तो बना दी शब भर में ईमां की ह़रारत वालों ने
मन अपना पुराना पापी है, बरसों में नमाज़ी बन न सका

"क़ब्र की पहली रात" नामी बयान ने ज़िन्दगी बदल दी

ऐ आ़शिक़ाने नमाज़! नमाज़ों में जल्द बाज़ी की आ़दत मिटाने, नमाज़ों के ज़रूरी अह़काम से आगाही पाने और नमाज़ों में ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ का जज़्बा बढ़ाने के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र का मा'मूल बनाइये। आप की तरग़ीब के लिये एक "मदनी बहार" पेश की जाती है : चुनान्चे एक इस्लामी भाई (उ़म्र तक़रीबन 24 साल) दुन्यादार क़िस्म के नौ जवान थे

जो दीनी मा'लूमात से कोसों दूर थे। **नमाज़ों** की पाबन्दी न रोज़ों का ख़याल! कुछ भी तो न था। बुरे दोस्तों के साथ आवारा गर्दी करना, फ़िल्में ड्रामे देखना उन का मा'मूल था। बुरी सोह़बत की वज्ह से शराब भी पीने लगे थे। इन जैसे भटके हुए इन्सान को नेकियों की शाहराह पर गामज़न करने का सेहरा दा'वते इस्लामी के एक मुबल्लिग़ के सर है जिन्हों ने उन पर इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की दा'वत दी और اَلْحَمْدُ لِلّٰه उन्हों ने उस इज्तिमाअ़ में शिर्कत की। उन पर थोड़ा बहुत असर ज़रूर हुवा मगर गुनाहों में क़ैद होने की वज्ह से वोह दा'वते इस्लामी की ज़ियादा बरकतें समेटने से महरूम रहे। फिर कुछ अ़र्से बा'द उन्हीं इस्लामी भाई ने इन को आ़शिक़ाने रसूल के साथ तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की दा'वत दी जिस पर लब्बैक कहते हुए इन्हों ने राहे ख़ुदा में सफ़र इख़्तियार किया। दौराने मदनी क़ाफ़िला एक मुबल्लिग़ ने 63 दिन का मदनी तरबियती कोर्स करने का ज़ेहन दिया और इन्हें येह कोर्स करने की भी सआ़दत नसीब हो गई। इसी कोर्स के दौरान फ़ैज़ाने मदीना में होने वाले तीन दिन के तरबियती इज्तिमाअ़ में शिर्कत का मौक़अ़ भी मिला जहां इन्हों ने बयान **"क़ब्र की पहली रात"** सुना तो इन के दिल में तब्दीली बरपा हो गई और इन्हों ने अपने पिछले गुनाहों से तौबा करते हुए सुन्नतों भरा हुल्या अपनाने की पक्की निय्यत कर ली। اَلْحَمْدُ لِلّٰه इन्हें एक मस्जिद में इमामत की सआ़दत भी ह़ासिल हुई और अ़लाक़ाई मुशावरत के निगरान की ह़ैसिय्यत से दा'वते इस्लामी का दीनी काम करने की ज़िम्मेदारी भी मिली।

तेरा शुक्र मौला दिया दीनी माह़ोल न छूटे कभी भी ख़ुदा दीनी माह़ोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 647)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अगले हफ़्ते का रिसाला